शिक्षण विधियां

① प्रभुत्ववादी विधियां
(शिक्षक केन्द्रित)

① व्याख्यान विधि
② प्रदर्शन विधि
③ व्याख्यान - प्रदर्शन विधि
④ ऐतिहासिक विधि
⑤ सामूहिक विधि
⑥ पाठ्यपुस्तक विधि
⑦ कहानी विधि
⑧ दल - शिक्षण विधि
⑨ ट्यूटोरियल विधि

② जनतांत्रिक विधियां
(छात्र केन्द्रित)

① प्रयोजना | प्रोजेक्ट विधि
② प्रयोगशाला विधि
③ अन्वेषण | खोज विधि
④ विचार - विमर्श विधि।
⑤ पर्यटन | शैक्षिक भ्रमण विधि
⑥ अभिक्रमित अनुदेशन
⑦ समस्या समाधान विधि
⑧ मस्तिष्क उद्वेलन विधि
⑨ खेल विधि।

① **व्याख्यान विधि** :- अन्य नाम - भाषण विधि या कथन विधि।

→ इस विधि में शिक्षक किसी विषय विशेष पर कक्षा में व्याख्यान देते हैं तथा छात्र निष्क्रिय होकर सुनते हैं।

⊙ **विशेषताएं** → यह विधि आर्थिक दृष्टि से उपयोगी है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक सामग्री व उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती।

→ इससे बालकों को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ जाती है-

→ यह दल विषय-वस्तु व विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार शिक्षण कार्य को प्रभावी रूप से संपादित करते है।

★ सर्वप्रथम प्रयोग – 1955

→ अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय।

(10) <u>ट्यूटोरियल विधि</u> :- इस विधि में विद्यार्थियों के एक समूह को पढ़ाया जाता है।

→ यह वे विद्यार्थी होते है जो कक्षा में पिछड़ जाते है। या इनको कोई प्रकरण समझ नही आता है। तो शिक्षक उनको अलग से शिक्षण करवाता है।

③ जनतांत्रिक विधियाँ :-

(1) <u>प्रोजेक्ट | प्रयोजना विधि</u> →

↓

• प्रतिपादक – जॉन ड्यूवी के शिष्य <u>किलपैट्रिक</u> ने।

→ <u>किलपैट्रिक के अनुसार</u> – "प्रोजेक्ट सामाजिक वातावरण में में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्यपूर्ण कार्य है"

→ इस विधि में छात्रो के समक्ष एक समस्या प्रस्तुत की जाती है। और छात्र उसका हल निकालने मे लगे रहते है।

→ इसमे छात्र स्वयं अपनी रूचि से विषय-वस्तु व क्रिया मे सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी अध्ययन गति से अधिगम करता है।

⊙ प्रयोजना विधि के पद | सोपान →

① उद्देश्य | परिस्थिति का निर्माण।
② योजना बनाना।
③ क्रियान्वयन
④ मूल्यांकन।

⊙ वर्तमान समय मे पद →

① परिस्थिति प्रदान करना।
② प्रोजेक्ट का चुनाव और उसके उद्देश्य का स्पष्टीकरण।
③ परियोजना का नियोजन | कार्यक्रम बनाना।
④ प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन।
⑤ प्रोजेक्ट का मूल्यांकन।
⑥ प्रोजेक्ट का अभिलेखन | आलेखन

⊙ प्रोजेक्ट के प्रकार ⊙

- (1) छात्र संख्या के आधारपर
  - व्यक्तिगत
  - सामूहिक
- (2) समय की दृष्टि से
  - लघु योजना
  - वृहद् योजना
- ③ उद्देश्य के आधारपर
  - → भौतिक वस्तु का निर्माण
  - → सीखने की योजना
  - → समस्यात्मक योजना

↳ इस विधि में शिक्षक विषय-वस्तु के सैद्धान्तिक पक्ष को व्याख्यान विधि द्वारा स्पष्ट करता है तथा व्यवहारिक व जटिल विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण प्रदर्शन विधि द्वारा करता है।

(4) सामूहिक वाद-विवाद विधि :-

↓

• अन्य नाम → सामूहिक परिचर्चा, सामूहिक विचार-विमर्श, सामूहिक गोष्ठी।

↳ इस विधि में सामूहिक परिचर्चा अर्थात् विद्यार्थियों तथा शिक्षक के मध्य या विद्यार्थियों के मध्य होने वाले पारस्परिक वाद-विवाद व विचारों के आदान-प्रदान को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का मुख्य का मुख्य आधार बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

⊙ विचार-विमर्श पद्धति के पद :-

1. विषय का चयन (Selection of Subject)
2. विचार-विमर्श हेतु तैयारी (Prepration for discussion)
3. विचार-विमर्श का संचालन | क्रियान्वयन
4. विचार-विमर्श का मूल्यांकन।

⊙ वाद-विवाद विधि के प्रकार :-

1. अनौपचारिक वाद-विवाद (Informal discussion)
2. औपचारिक वाद-विवाद (formal discussion)

↓

(a) पैनल-चर्चा

(b) परिसंवाद | परिचर्चा

↳ यह विधि हरबर्ट स्पेन्सर के इस कथन पर आधारित है-

"बालकों को जितना संभव हो कम से कम बताया जाये और यथा-संभव उनको खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

↳ यह मनोवैज्ञानिक विधि है।

⊙ दोष /सीमाएँ →

- यह विधि छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी नही हैं।
- यह दीर्घ व खर्चीली है। तथा इससे पाठ्यक्रम को समय पर पुरा करने में कठिनाई आती है।
- इस विधि के लिए समस्याओं का निर्धारण करना कठिन है।

(4) विचार-विमर्श विधि :-

विचार-विमर्श को चर्चा-परिचर्चा विधि भी कहते है।

- इस विधि में शिक्षक तथा विद्यार्थी सहयोगपूर्ण ढंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते है।
- इसमें विद्यार्थी को अपनी बात कहने, सुनने व प्रश्न करने का पुरा अवसर प्राप्त होता है।
- यह विधि पुर्णत: लोकतांत्रिक विधि है।

★ महत्वपुर्ण घटक → ① शिक्षक - विद्यार्थी समूह
② समस्या
③ समस्या का समाधान

⊙ विचार-विमर्श विधि के सोपान →

① समस्या की प्रस्तुती

② समस्या तथा समाधान के स्त्रोंतो से अवगत कराना।

→ इसमें कम समय में विषय वस्तु का ज्ञान सरल, सुगम व बोधगम्य तरीके से कराया जा सकता है।

→ कई परिस्थितियों में यह विधि विशेष रूप से उपयोग है।

- → किसी पाठ की प्रस्तावना व सारांश करते समय।
- → प्रयोग से संबंधित निर्देश देते समय।
- → कठिन प्रसंगो को स्पष्ट करते समय।
- → महान व्यक्तियों, वैज्ञानिकों की जीवनी से परिचित कराते समय।

⊙ **दोष** :—
1. प्राथमिक कक्षाओ के लिए उपयोगी नही।
2. यह विधि अ मनोवैज्ञानिक है।
3. इस विधि से व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति नही हो पाती है।
4. केवल कुशल तथा योग्य अध्यापक ही इस विधि का अनुसरण कर पाते है।

② प्रदर्शन विधि :—

इस विधि मे किसी तथ्य, नियम, सिद्दांत संरचना या कार्यप्रणाली को दृश्य रूप में स्पष्ट किया जाता है। अर्थात् इस विधि में किसी वैज्ञानिक घटना को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

└→ यह विधि मूर्त से अमूर्त शिक्षण सूत्र पर आधारित है।

⊙ **सोपान / पद (STEP)** →
1. अध्यापक द्वारा तैयारी व योजना बनाना।
2. पाठ की प्रस्तावना करना।

(2) प्रयोगशाला विधि :- यह पूर्ण क्रियात्मक विधि है, जिसमे विद्यार्थी स्वयं क्रिया करते हुए सीखता है।

→ गणित व विज्ञान विषय में यह विधि उपयोगी है।

→ यह विधि स्थूल से सूक्ष्म की ओर, ज्ञात से अज्ञात, करके सीखना..... आदि शिक्षण सिद्धांतो पर आधारित है।

→ इस विधि मे छात्र व अध्यापक दोनों सक्रिय रहते है। अध्यापक छात्रो को आवश्यक दिशा -निर्देश प्रदान करके उनका मार्गदर्शन करने के साथ -साथ उनके कार्यों का निरीक्षण करता है।

⊙ दोष / सीमाएँ :-

① प्रत्येक प्रकरण को इस विधि से पढ़ाया जाना संभव नही है।

② यह विधि अत्यंत खर्चीली है तथा समय भी अधिक लगता है।

③ सभी शिक्षक इस विधि का प्रभावशाली उपयोग नही कर सकते।

(3) अन्वेषण / खोज विधि :- अन्य नाम - अनुसंधान विधि

→ ह्यूरिस्टिक विधि

→ स्वत: ज्ञान विधि

• प्रवर्तक - H.J आर्मस्ट्रांग

→ ह्यूरिस्टिक शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के ह्युरिस्को से मानी जाती है [अर्थ - मैं खोजता हूँ।]

→ इस विधि में बालक स्वयं एक खोजी के रूप में कार्य करता है। तथा समस्याओं के समाधान करता है।

(5) <u>कार्य गोष्ठी विधि</u> :- इस विधि वाद-विवाद का एक विस्तारित रूप है।

- इस विधि में रचनात्मक कार्य में विशेष बल दिया जाता है।
- इसमें विचार पक्ष की अपेक्षा कार्य-पक्ष पर बल दिया जाता है।

⊙ <u>गुण</u> :-

① इसमें समूह का नेतृत्व करने का अवसर मिलता है, जिससे यह छात्रों मे नेतृत्व क्षमता के विकास में सहायक है।

② मिल-जुलकर कार्य करने से परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है।

③ वाद-विवाद द्वारा विद्यार्थी सामूहिक रूप से निर्णय करना सीखते है।

④ इसमे छात्रों में तर्क-शक्ति, आलोचनात्मक चिंतन व मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

⑤ यह छात्रों को क्रियाशील बनाए रखती है।

⊙ <u>दोष</u> :-

① बोलने में दक्ष विद्यार्थी वाद-विवाद मे प्रभुसता बना लेते है। जिससे शर्मीले व मंद बुद्धि वाले विद्यार्थियों हेतु बहुत ज्यादा लाभदायक नही।

② कई बार निरर्थक वाद-विवाद हो जाने पर श्रम व समय का अपव्यय होता है।

③ इसके द्वारा सम्पूर्ण विषय-वस्तु का शिक्षण संभव नही होता है।

⑥ **ऐतिहासिक विधि :-** अतीत की सहायता से वर्तमान को समझने की विधि है।

→ इस विधि का शिक्षण में विशेष महत्व है क्योंकि कुछ विषय ऐसे होते है जिससे बिना पुस्तक के पढ़ाना या पढ़ना असंभव होता है।

→ इस विधि में पुस्तक पढ़कर ज्ञान प्रदान किया जाता हैं। जिसमे समय व श्रम की बचत होती है।

(7) **पाठ्यपुस्तक विधि :-** यह विधि बहुत ही प्राचीन व सरल विधि है।

→ P.Y. यंग के अनुसार आगमन के सिद्धांतो के आधार पर अतीत की उन सामाजिक शक्तियो की खोज है, जिन्होने वर्तमान को ढाला है।

⑧ **कहानी विधि :-**
इस विधि में अध्यापक शिक्षण को कहानी के माध्यम पढ़ाता है।

→ इस विधि में बच्चे केवल सुनता है।

→ रामायण, महाभारत आदि प्रकरण को इस विधि से आसानी से समझाया जाता है।

→ छोटी कक्षाओ के लिए उपयोगी है।

⑨ **दल-शिक्षण विधि :-** अन्य नाम - टोली-शिक्षण

→ इस विधि में एक अध्यापक के स्थान पर विभिन्न क्षेत्रों के दक्ष अध्यापकों का एक दल होता है।

③ पाठ का प्रस्तुतीकरण करना।

④ प्रयोग का प्रदर्शन करना।

⑤ श्यामपट्ट कार्य व सारांश।

⑥ कक्षा का निरीक्षण व मुख्य बिन्दुओ का आंकलन।

⑦ प्रदर्शन का मूल्यांकन।

⊙ गुण / विशेषता :-

→ ① सस्ती, कम खर्चीली है।

② इस विधि में कक्षा का वातावरण सक्रिय रहता है। अर्थात इस विधि मे शिक्षक व विद्यार्थी दोनों सक्रिय रहता है।

③ यह विधि देखो, सुनो व समझो के सिद्धांत पर आधारित है।

④ इस विधि मे वैज्ञानिक नियमों, सिद्धांतो व सूत्रो को सरलता से सीखा जा सकता है।

⊙ दोष / कमियां :-

① इस विधि में छात्रो को अप्रत्यक्ष अनुभव होते है।

② ज्यादा बडे समूह में प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली नही हो पाता है।

③ इस विधि मे छात्रो मे प्रयोगात्मक कुशलताओं का अपेक्षित विकास नही हो पाता है।

(3) व्याख्यान - प्रदर्शन विधि :-

यह व्याख्यान व प्रदर्शन विधि का मिला जुला रूप है जिसमे इनकी कमियों को दूर किया जाता है।

↳ इस विधि में विद्यार्थियो का एक ग्रुप या समूह बनाकर उनके सामने एक समस्या रखी जाती है तथा सभी सदस्यो का उस समस्या से संबंधित उनके मस्तिष्क मे आने वाले विचारो को प्रकट करने की बिना किसी रोक-टोक व सही गलत के पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है एवं प्राप्त विचारों पर परिचर्चा उपरांत प्राप्त निष्कर्ष को समस्या के हल के रूप मे स्वीकार कर लिया जाता है।

⊙ पद / सोपान (Step) → 1987 में विल्सन ने दिये।

① परिचय
② हिमभंजक
③ विषय या समस्या का परिभाषीकरण
④ समस्या का संकेंद्रण
⑤ संकेन्द्रीय कथन का चयन
⑥ मस्तिष्क विप्लव
⑦ प्रमुख सुझाव के चयन और उसके उपयोग के सुझाव
⑧ मूल्यांकन करना

⑨ खेल विधि :- पर्यावरण विषय के शिक्षण मे यह विधि उपयोगी है।

↳ खेल-खेल में जो बात विद्यार्थी सीख जाते है, वह कभी नही भूलते है इसलिए प्राथमिक व पूर्व प्राथमिक कक्षाओ के लिए विधि एक मनोरंजन का कार्य भी करती है। और बच्चे उसमे रुचि लेने लगते है। धीरे-धीरे खेल के माध्यम से वह सीखने भी लगते है।

★ इसके अंतर्गत निम्न विधिया शामिल है →

① किन्डर गार्टन विधि — फ्रॉबेल
② मॉण्टेसरी विधि — मारिया मॉण्टेसरी
③ डॉल्टन विधि — डॉल्टन
④ खेल विधि — कोल्डवेल कुक

③ विद्यार्थी द्वारा परिचर्चा से पूर्ण की जाने वाली तैयारी

④ परिचर्चा का संचालन।

⑤ परिचर्चा के बाद का कार्य

⑥ मूल्यांकन

(5) पर्यटन / शैक्षिक भ्रमण विधि :-

- **अन्य नाम** – पर्यटन विधि, क्षेत्र परिदृश्य विधि, सरस्वती यात्रा स्कूली जर्नी, एक्सकर्सन।
- **प्रतिपादक** – अरस्तु, प्लेटो, पेस्टोलॉजी

↳ प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के लिए शैक्षिक भ्रमण विधि उपयोगी है।

⊙ **उद्देश्य** :- ① विषय के प्रति रुचि विकसित करना।

② वास्तविक प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना

③ व्यवहारिक ज्ञान देना।

⊙ **लाभ / विशेषता** :-

① छात्र निरीक्षण द्वारा स्वयं सीखते है तथा अनौपचारिक शिक्षण प्रदान करना संभव हो पाता है।

② छात्रो की जिज्ञासा व शंकाओ का समाधान होता है।

③ छात्र - शिक्षक के निकट संपर्क से आत्मीयता बढ़ती है।

⊙ **कमी / सीमाएं** :-

① छात्र संख्या अत्यधिक होने से आयोजन मे कठिनाई होती है।

② विद्यालय समय सारणी में इन कार्यक्रमों की व्यवस्था नहीं होती है एवं समयाभाव की समस्या बनी रहती है।

(7) समस्या समाधान विधि :-

इस विधि में विद्यार्थी के समक्ष कोई विशेष समस्या या कठिनाई या परिस्थिति रखी जाती है, जिसका विद्यार्थी मानसिक क्रियाओं द्वारा हल ढूंढने का प्रयास करता है।

◉ पद/सोपान (steps) →

① समस्या का चयन ② समस्या का प्रस्तुतीकरण
③ परिकल्पनाओं का निर्माण (4) आँकड़ो का विश्लेषण
(5) आंकड़ो का संग्रह (6) आंकड़ो का विश्लेषण

◉ लाभ :-

① इस विधि द्वारा छात्रों में विश्लेषण, संश्लेषण व समालोचनात्मक चिंतन का विकास होता है।

② इस विधि द्वारा निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

◉ कमीयाँ/सीमाएँ :-

① यह विधि छोटी कक्षाओं के छात्रों के लिए अधिक उपयुक्त नही है।

② इसमें सीखनें की गति धीमी होती है।

③ सही समस्या का चयन करना स्वयं एक समस्या है।

(8) मस्तिष्क उद्वेलन विधि :- ◉ प्रतीपादक – एलेक्स F. ऑसबोर्न

◉ अन्य नाम → ① मस्तिष्क विप्लव ② मानस उद्वेलन
③ मस्तिष्क आवेशक ④ मस्तिष्क झंझावत

⑥ अभिक्रमित अनुदेशन :- इस विधि में सीखने योग्य सामग्री या विषय वस्तु को छोटे-छोटे पदो या खण्डो में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है

↳ इसमे विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार स्वयं प्रयत्न करके अपनी गति से सीखता है।

⊙ इस विधि में प्रयुक्त शिक्षण सूत्र :-

① सरल से कठिन की ओर।
② ज्ञात से अज्ञात की ओर।
③ मूर्त से अमूर्त की ओर।
④ स्थूल से सूक्ष्म की ओर।

↳ अभिक्रमित अनुदेशन या अभिक्रम या उद्गम अधिगम के मनोविज्ञान से हुआ है (थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित है)

⊙ प्रतिपादक – B.F स्किनर

⊙ B.F स्कीनर के अनुसार → "अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण की कला तथा सीखने का विज्ञान है।

⊙ प्रकार →
① रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन — B.F स्कीनर
② शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन – नार्मन A. क्राउडर
③ मैथेटिक्स | अवरोह अभिक्रमित अनुदेशन – T.F गिलबर्ट
④ कम्प्यूटर सह अनुदेशन – लॉरेन्स स्टोलुरो